Vacant posh in Customs

969. SHRI LAKKHIRAM AGARWAL: Will the Minister of FINANCE be pleased to' state:

(a) whether it is a fact that there are number of Group 'B' Gazetted posts lying vacant in Customs;

(b) if so the details thereof, Collectorate-wise;

(c) whether the revenue collection has been adversely affected due to these vacant posts;

(d) if so, what is the extent of revenue tes on this account;

(e) whether it is a fact that the candidates selected by Union Public Service Commission in June 1993 for Group '3' Gazetted posts are still awaiting appointments; and

(f) if so, what are the lessons for delay in their appointments and by when Govern ment propose to appoint them?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI M.V. CHANDRA SHEKHAR MURTHY): (a) to (f) Bombay, Calcutta and Madras Custom-Houses have 6,8 and 33 nacancies respectively in Group 'B' Gazetted posts on Customs side. These vacancies have not effected collection of revenue. 30 candi dates became available for appointment as Appraiser in December 1993. They have been allocated to various Customs-Houses for issuance of offer of appointment which will be issued shortly.

अनुमानित बजट घाटे संबंधी आंकड़े

970. **श्री सोम पाल :**
श्री शारदा महन्तो :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चालू वर्ष के दौरान राजस्व, राजकोषीय, वित्तीय एवं बजट घाटे संबंधी नवीनतम अनुमान क्या हैं और उनका क्या आधार है ;

(ख) क्या सरकार इन घाटों को वर्ष 1994–95 के बजट अनुमानों के समय इनको सीमित रखने के संबंध में निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार सीमित रखने के लिए प्रतिबद्ध है ;

(ग) यदि हां, तो चालू वर्ष में अब तक की आय-व्यय की स्थिति को देखते हुए इसमें कितनी सफलता मिलने की संभावना है ; और

(घ) सरकार द्वारा इन घाटों को नियत स्तर से आगे न बढ़ने देने को सुनिश्चित करने के लिए अब तक कौन-कौन से ठोस कदम उठाए गए हैं?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम० वी० चन्द्रशेखर मूर्ति (क) मई, 1994 के अन्त तक घाटे की स्थिति निम्नानुसार है :–

(करोड़ रुपयों में)

	बजट अनुमान 94–95	मई, 94 तक
राजस्व घाटा	32727	6811
बजट घाटा	6000	135
राजकोषीय घाटा	54915	13693

(ख) जी, हां ।

(ग) राजकोषीय व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए 1994–95 के बजट भाषण में यह बताया गया है कि भारतीय रिजर्व बैंक को तदर्थ खजाना बिल जारी करके बजट घाटे और उसकी वित्त व्यवस्था दोनों को 6000 करोड़ रुपए तक सीमित रखा जाएगा । घाटों से संबंधित स्थिति नियंत्रण में है ।

(घ) सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि चालू वित्तीय वर्ष में व्यय बजट अनुमानों से अधिक न हो और आय के लिए निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति हो सके,

राजकोषीय ईमानदारी के पथ का अनुसरण कर रही है।

विदेशी कर्ज और उसकी अदायगी की राशि

971. **श्री राम जेठमलानी :**
मौलाना अबदुल्ला खान आज़मी:

क्या **वित्त मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वित्तीय वर्ष 1993-94 के दौरान विदेशों से कितनी राशि कर्ज और सहायता के रूप में प्राप्त की गई है और अप्रैल, 1994 को देश में विदेशी कर्ज की स्थिति क्या थी ;

(ख) क्या यह सच है कि उक्त वित्तीय वर्ष के दौरान, गत वर्षों में प्राप्त विदेशी कर्जों की अदायगी की किश्तों और उन पर ब्याज का भुगतान भी समय-समय पर किया जाता रहा ;

(ग) यदि हां, तो कुल कितनी राशि की अदायगी की गई है ;

(घ) क्या यह भी सच है कि विदेशी कर्ज एवं विदेशी सहायता की राशि तथा विदेशी कर्जों पर ब्याज एवं किश्तों की अदायगी की राशि के मध्य अंतर पिछले कुछ वर्षों से लगातार बढ़ रहा है; और

(ङ) यदि नहीं, तो वर्ष 1991-92, 1992-93, और 1993-94 के दौरान, उक्त अंतर का अलग-अलग ब्यौरा क्या है?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम. वी० चन्द्रशेखर मूर्ति) : (क) 1993-94 के दौरान विभिन्न देशों संस्थानों से विदेशी ऋण और सहायता की राशि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष उधार और विदेशी वाणिज्यिक उधार सरकारी खाते, गैर सरकारी खाते में 17658 करोड़ रुपए बैठते हैं। 31 मार्च, 1994 को स्थिति के अनुसार इन खातों पर बकाया विदेशी ऋण 198009 करोड़ रुपए होने का अनुमान है।

(ख) जी, हां ।

(ग) 1993-94 के दौरान इन खातों पर मूलधन की पुनर्अदायगी और ब्याज के भुगतान की राशि क्रमशः 11258 करोड़ रुपए और 7854 करोड़ रुपए होने का अनुमान है ।

(घ) जी, हां ।

(ङ) प्रश्न नहीं उठता।

मुद्रा प्रसार की दर में वृद्धि

972. **श्री राम जेठ मलानी** : : क्या **वित्त मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गत वित्तीय वर्ष 1993-94 के दौरान देश में मुद्रा प्रसार की दर बढ़कर लगभग 18 प्रतिशत हो गई थी ;

(ख) यदि नहीं, तो इस संबंध में तथ्य क्या हैं ;

(ग) क्या यह भी सच है कि देश में मुद्रा प्रसार में वृद्धि होने से मूल्यों में वृद्धि होने के आसार बढ़ जाते हैं ;

(घ) यदि हां, तो सरकार की उस पर क्या प्रतिक्रिया है; और

(ङ) उक्त वर्ष के दौरान देश में मुद्रा प्रसार में हुई वृद्धि के क्या कारण थे?

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एम० वी० चन्द्रशेखर मूर्ति) : : (क) जी, हां। वित्तीय 1993-94 के दौरान मुद्रा आपूर्ति (एम० 3) की दर में 18.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

(ख) प्रश्न उत्पन्न नहीं होता।

(ग) और (घ) अर्थ व्यवस्था में कीमतों में वृद्धि, बाजार के भाव और आपूर्ति दोनों पक्षों पर कार्य कर रहे परस्पर अन्यो न्यक्रियाओं के कारण समूहों का परिणाम है और इस तरह मुद्रा आपूर्ति में तीव्र वृद्धि के समान एकाकी कारक मुख्य रूप से उत्तरदायी नहीं हो सकता फिर भी, मुद्रा प्रसार से उत्पन्न मांग दबावों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा नकद आरक्षित अनुपात बाए रखा जा सकता है जो निवल मांग और सावधिक देयताओं का 14 से 15 प्रतिशत तक के तीन चरणों में वसूल किया जा रहा है। व्यर्थ राजकोषीय हुंडियों के माध्यम से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा [illegible] सरकार को दिए